International Journal of Information Movement *Vol. 7 Issue XI* *(March 2023)*
Website: www.ijim.in *ISSN: 2456-0553 (online)* Pages 52-54

सुभाष चन्द्र बोस का भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम में योगदान

डॉ॰ पुष्पा
विभागाध्यक्ष इतिहास
बाबू अनन्त राम जनता महाविद्यालय,
कौल (कैथल)
Email: drpushpatamak@gmail.com

प्रस्तुत शोध पत्र में "सुभाष चन्द्र बोस का भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम में योगदान" पर प्रकाश डालने का अथक प्रयास किया गया है। सुभाष चन्द्र बोस भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम में सबसे अधिक प्रेरणा के स्त्रोत रहे है और भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन के इतिहास में उनका नाम स्वर्णिम अक्षरों में अंकित है। उन्होंने अपनी मातृभूमि की सेवा के लिए अपना तन, मन व धन सभी कुछ अर्पित करके एक सच्चे राष्ट्रवादी होने का पक्का प्रणाम प्रस्तुत किया। उन्होंने विदेशी जमीन पर जाकर आजाद हिन्द फौज की स्थापना करके यह सिद्ध कर दिया कि राष्ट्रवाद सीमाओं का मोहताज नहीं है। नेता जी सुभाष चन्द्र बोस एक उच्च कोटि के राजनीतिज्ञ, योग्य प्रशासक, प्रभावशाली वक्ता, महान विचारक एवम् एक सच्चे राष्ट्र भक्त थे। सुभाषचन्द्र बोस पर स्वामी विवेकानंद, उनके गुरु स्वामी रामकृष्ण परमहंस व अरविन्द जी के गहन दर्शन व उनकी उच्च भावना का विशेष प्रभाव पड़ा । सुभाष चन्द्र बोस मानते थे कि उदारवादी विचारधारा पर चलकर हम कभी भी भारत को ब्रिटिश हुकुमत से आजाद नहीं करवा सकते है। इसलिए उनका मानना था कि हम उग्र क्रान्तिकारी राष्ट्रवादी विचारधारा पर चलकर ही ब्रिटिश हुकुमत से छुटकारा प्राप्त कर सकते है। सुभाष चन्द्र बोस देश की आजादी के लिए सदैव तत्पर रहते थे ।

महान स्वतन्त्रता सेनानी सुभाष चन्द्र बोस का जन्म 23 जनवरी, 1897 ई॰ में उड़ीसा के कटक में हुआ। इनके पिता का जानकी नाथ बोस व माता प्रभावती थी। नेता जी बच्चपन से ही कुशाग्र बुद्धि के बालक थे। उन्होंने 1919 ई॰ में स्काटिश चर्च कॉलेज से बी॰ए॰ पास की व विश्वविद्यालय में दूसरे स्थान पर रहे। उन्होंने 1920 ई॰ में भारतीय नागरिक सेवा की परीक्षा में चतुर्थ स्थान प्राप्त किया। 1920 ई॰ में सुभाष चन्द्र बोस महात्मा गांधी के द्वारा शुरू किये गए असहयोग आन्दोलन में शामिल हुए। लेकिन जब यह आन्दोलन सफलता की सीढ़ी पर चढ़ने वाला ही था तो चौरा–चौरी की घटना से दुःखी होकर गांधी जी ने यह आन्दोलन स्थगित कर दिया। इस घटना से सुभाष चन्द्र बोस बहुत दुखी हुए। उन्होंने महात्मा गांधी का साथ छोड़कर चितरंजन दास (सी॰आर॰ दास) की स्वराज्य पार्टी में शामिल हो गए। नेता जी सुभाष चन्द्र बोस सी॰आर॰ दास की कार्य प्रणाली, विचारों से बहुत प्रभावित हुए और उनको अपना राजनीतिक गुरू मान लिया। 1921 ई॰ में सुभाषचन्द्र बोस ने अपनी मातृभूमि की सेवा करने के उद्देश्य से भारतीय नागरिक सेवा (आई॰सी॰ दास) से त्याग पत्र दे दिया और भारत की आजादी के संग्राम में कूद पड़े । सुभाष चन्द्र बोस एक युवा प्रशिक्षक, पत्रकार व बंगाल कांग्रेस के स्वयं सेवक बने । 1924 ई॰ में कलकता कारपोरेशन में चीफ एग्जीक्यूटिव ऑफिसर नियुक्त हुए। 25 अक्तूबर 1924 को ब्रिटिश हुकुमत ने सुभाष चन्द्र बोस को पुनः गिरफ्तार कर लिया क्योंकि ब्रिटिश सरकार सुभाष चन्द्र बोस को अपना सबसे बड़ा खतरनाक दुश्मन समझती थी। इसलिए अंग्रेजी सरकार ने 25 जनवरी, 1925 ई॰ को उन्हें मांडले जेल में भेज दिया। 1927 ई॰ को उन्हें सरकार ने अस्वस्थ रहने के कारण रिहा कर दिया । 1927 में ही सुभाष चन्द्र बोस बंगाल कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष चुने गए । उन्होंने हमेशा हिन्दू–मुस्लिम एकता के लिए भरसक प्रयास किए। सुभाष चन्द्र बोस ने 1930 ई॰ में सविनय अवज्ञा आन्दोलन में बढ़–चढ़कर कर भाग लिया। सुभाष चन्द्र बोस गांधी–इरविन समझौते के विरूद्ध थे। उन्होंने भगत सिंह को फांसी दिए जाने का प्रबल विरोध किया । नेता जी सुभाष चन्द्र बोस ने सम्पूर्ण देश का भ्रमण करके नवयुवकों में एक नवचेतना का संचार किया । उन्होंने गान्धी जी की अहिंसावादी विचारधारा को पूर्णतया त्याग दिया । सुभाष चन्द्र ने यूरोप के विभिन्न देशों की यात्रा की तथा वहां के लोगों से भारत की स्वतन्त्रता के पक्ष में समर्थन प्राप्त करने का भरसक प्रयास किया । 1938 ई॰ में सुभाष चन्द्र बोस हरिपुरा कांग्रेस अधिवेशन में प्रथम बार कांग्रेस के अध्यक्ष चुने गए । 1939 ई॰ में एक बार फिर त्रिपुरी अधिवेशन में वो कांग्रेस के अध्यक्ष बने । सुभाष चन्द्र बोस चाहते थे कि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए एक तिथि निश्चित कर देनी चाहिए। कुछेक अन्य मामलों में भी सुभाष चन्द्र बोस व महात्मा गांधी के आपसी विचार नहीं मिलते थे। इस कारण दोनों के मतभेद इतने बढ़ गए कि सुभाष चन्द्र बोस ने कांग्रेस अध्यक्ष पद से त्याग पत्र दे दिया ।

1.0 फारवर्ड ब्लॉक की स्थापना :

नेता जी सुभाष चन्द्र बोस ने महात्मा गांधी व कांग्रेस के अन्य नेताओं से मतभेद दूर करने के प्रयास किए, परन्तु उनको असफलता हाथ लगी । मई, 1939 को सुभाष चन्द्र बोस ने एक नए गुट का गठन किया जिसे फारवर्ड ब्लॉक/अग्रगामी दल कहा गया। इसका प्रमुख उद्देश्यपूर्ण स्वाधीनता प्राप्ति के लिए ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विरूद्ध निरन्तर संघर्ष जारी रखना, एक पूर्ण व आधुनिक ढंग के समाजवादी राज्य की स्थापना करना, देश के आर्थिक पुनर्निर्माण के लिए वैज्ञानिक ढंग से न्यायक पैमाने पर उत्पादन करना, उत्पादन वितरण के साधरनों पर सामाजिक स्वामित्व व नियन्त्रण स्थापित करना, व्यक्ति को धार्मिक स्वतन्त्रता प्रदान करना, नए भारत के निर्माण में समानता व सामाजिक न्याय के सिद्धान्तों को लागू करना इत्यादि प्रमुख उद्देश्य थे। नेता जी सुभाष चन्द्र बोस ने फारवर्ड ब्लॉक की स्थापना करने के बाद देश के युवाओं में राष्ट्रीयता की भावना का प्रचार व प्रसार किया। लेकिन अंग्रेजी हुकुमत ने 1940 में पुनः बंदी बना लिया। भारतीय इतिहास की इस नाजुक घड़ी में नेता जी सुभाष चन्द्र बोस ने धैर्य व साहस कम नहीं होने दिया व 1941 में अपने कलकत्ता के आवास से वेश बदलकर निकल भागे और काबुल व मास्को के रास्ते अंततः जर्मन पहुंच गए।

2.0 आजाद हिन्द व सुभाष चन्द्र बोस :

1942 ई॰ को भारत छोड़ो आन्दोलन को ब्रिटिश सरकार ने कूचल दिया और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के सभी नेताओं को जेल में डाल दिया गया । ऐसी विपरीत परिस्थितियों में नेता जी सुभाष चन्द्र बोस ने विदेशी धरती से आजादी की लड़ाई जारी रखने की रणनीति बनाई और जापान के सहयोग से आजाद हिन्द फौज का गठन किया । शीघ्र ही सिंगापुर, मलाया, जावा, सुमात्रा व बर्मा आदि स्थानों पर आजाद हिन्द फौज के दफ्तर खोले गए। इन प्रदेशों में रहने वाले बहुत से भारतीय नवयुवक भी आजाद हिन्द फौज में शामिल हो गए । शीघ्र ही फौज में सैनिकों की संख्या पचास हजार तक जा पहुंची। सुभाष चन्द्र बोस ने आजाद हिन्द फौज के सैनिकों को एक नया जीवन प्रदान किया, उन्हें एक नया मार्ग दिखाया, जो जोश व उत्साह से प्रेरित था। सिंगापुर में सुभाष चन्द्र बोस ने सैनिकों को प्रेरित करते हुए कहा कि भारत के सिपाहियों भारतवर्ष उन्हें पुकार रहा है, उठो अब समय खोने के लिए नहीं है। हथियार उठाओ, दिल्ली का रास्ता आजादी का रास्ता है। दिल्ली चलो। नेता जी सुभाष चन्द्र बोस ने सैनिकों की अलग–अलग रेजीमेंट बनाई जिनमें महात्मा गांधी, जवाहर लाल नेहरु, सुभाष चन्द्र बोस, मौलाना आजाद व रानी झांसी रेजीमेंट नाम प्रमुख थे। सुभाष चन्द्र बोस ने सभी सैनिकों को अच्छा प्रशिक्षण प्रदान किया। आजाद हिन्द फौज का नारा था "दिल्ली चलो" और उनका अभिवादन था "जय हिन्द"। सुभाष चन्द्र बोस का कहना था, "तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूंगा। 1943 में सुभाष चन्द्र बोस ने स्वतन्त्र भारत की अन्तरिम सरकार की स्थापना की। तुरन्त ही इस सरकार को जापान, इटली, जर्मनी, चीन, बर्मा, कोरिया, आयरलैंड आदि देशों ने मान्यता प्रदान कर दी। शीघ्र ही जापान ने अंडेमान तथा निकोबारद्वीप नेता जी सुभाष चन्द्र बोस को सौंप दिये। इस प्रकार भारतीय क्षेत्र अन्तरिम सरकार के अधिकार में आ गए । नेता जी उनके नाम शहीद व स्वराज्य रखा । 1943 तक उन्होंने इन द्वीपों में भारतीय ध्वज फहरा दिया। जून 1943 में सुभाष चन्द्र बोस ने टोकियो रेडियो से घोषणा की कि अब अंग्रेजों से आशा करना व्यर्थ है कि वे अपने साम्राज्य को नष्ट कर देंगे। हमें स्वयं भारत के भीतर व बाहर से स्वतन्त्रता के लिए संघर्ष करना होगा। 1944 को आजाद हिन्द फौज सेना ने अंग्रेजों पर भयंकर हमला बोल दिया और रामू, कोहिया, पलेल आदि भारतीय क्षेत्रों को अंग्रेजों से मुक्त करा लिया। लेकिन दुर्भाग्यवंश इसी बीच द्वितीय विश्व युद्ध में जापान व जर्मनी की हार हुई, उन्होंने मित्र राष्ट्रों के आगे आत्मसमर्पण कर दिया। सुभाष चन्द्र बोस ने भी टोकियो की तरफ पलायन किया और कहा जाता है कि 18 अगस्त, 1945 ई॰ को एक विमान दुर्घटना में सुभाष चन्द्र बोस की मृत्यु हो गई। इसके पश्चात् आजाद हिन्दी फौज के अनेक सैनिकों व अधिकारियों को बंदी बना लिया गया और उन पर दिल्ली के लाल किले में देशद्रोह का अभियोग चलाया गया । भारत की सम्पूर्ण जनता ने आजाद हिन्द के सैनिकों व अधिकारियों की रिहाई की मांग की । आजाद हिन्द फौज के प्रति जनता की भावनाओं को देखते हुए कांग्रेस कमेटी ने कानूनी बचाव की प्रक्रिया शुरू की और आजाद हिन्द फौज के तीनों अधिकारियों की और से मुकदमा लड़ने की घोषणा की । भोला–भाई देसाई, तेज बहादुर सप्रू व पंडित जवाहर लाल नेहरू इन तीनों व्यक्तियों के वकील थे। मुकदमें की सुनवाई दिल्ली के ऐतिहासिक लाल किले में शुरू हुई। ब्रिटिश हुकुमत तीनों अधिकारियों को दण्ड देने पर तुली हुई थी। अंतः तीनों अभियुक्तों को आजन्म कारावास का दण्ड दिया गया लेकिन जैसे ही निर्णय जनता तक पहुंचा सम्पूर्ण भारत में विरोध की लहर फैल गई। जगह–जगह प्रदर्शन व दंगे शुरू हो गए। अब ब्रिटिश सरकार को अपने साम्राज्य की चिन्ता होने लगी और उन्होंने दंगों का देखते हुए तीनों अधिकारियों (शाहनवाज खान, गुरूबक्श ढिल्लों, प्रेम कुमार सहगल) को मुक्त कर दिया। यद्यपि आजाद हिन्द फौज भारत को आजादी तो नहीं दिला सकी, परन्तु उसने स्वतन्त्रता लड़ाई को एक निर्णायक मोड़ तक अवश्य ही पहुंचा दिया था। इस प्रकार यह हमेशा सत्य ही रहेगा की सुभाष चन्द्र बोस तथा आजाद हिन्द फौज का भारत के स्वतन्त्रता संघर्ष में बड़ा महत्त्वपूर्ण स्थान है।

3.0 सारांश :

यद्यपि आजाद हिन्दी फौज व सुभाष चन्द्र बोस का लम्बा संघर्ष घोर विपत्तियों के कारण विफल रहा परन्तु फिर भी इसे भारत के स्वतन्त्रता संघर्ष में विशेष स्थान प्राप्त है। सुभाष चन्द्र बोस व आजाद हिन्द फौज भारतीय स्वतन्त्रता संघर्ष में एक मील पत्थर है। वस्तुत सुभाष चन्द्र बोस भारतीय स्वतन्त्रता संघर्ष के महान नेता थे, जिन्होंने राष्ट्रीय आन्दोलन को एक नई दिशा प्रदान की। उन्होंने विदेशी धरती पर आजाद हिन्द फौज का गठन करके एक सच्चे भारतीय होने का प्रमाण दिया। वास्तविक रूप में सुभाष चन्द्र बोस ब्रिटिश साम्राज्य के विरोधी थे। उन्होंने नेहरू रिपोर्ट का भी विरोध किया और पूर्ण स्वराज्य के लक्ष्य का समर्थन किया। जब भी ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ भारत के स्वतन्त्रता संग्राम के इतिहास की बात आती है तो महत्त्वपूर्ण स्वतन्त्रता सेनानीयों में नेता जी सुभाष चन्द्र बोस का नाम अग्रणी रूप में है। सुभाष चन्द्र बोस व आजाद हिन्द फौज ने ब्रिटिश हुकुमत के अन्यायपूर्ण कार्यों को रोकने व उन्हें अपने देश में वापिस जाने के निर्णय में एक महत्त्वपूर्ण योगदान दिया, जिसके परिणामस्वरूप नेता जी सुभाष चन्द्र बोस ने भारत की आजादी के लिए मार्ग प्रशस्त किया। सुभाष चन्द्र बोस ने गुलामी के भारत में भी महिलाओं को आगे बढ़ने पर बल दिया और कहा कि महिलाओं में अदम्य साहस होता है । इसलिए उन्होंने आजाद हिन्द फौज में एक महिला बटालियन भी गठित की । आज भी भारत को ऐसे ही सच्चे निष्ठावान, निष्पक्ष, निडर एवम् स्वाभिमानी नेताओं की आवश्यकता है। वो महान आत्मा सुभाष चन्द्र बोस ही थे जिन्होंने पहली बार महात्मा गांधी को राष्ट्रपिता कहकर सम्बोधित किया था और अपने स्वाभिमान को कायम रखने के लिए कांग्रेस कमेटी से इस्तीफा दिया था। सुभाष चन्द्र बोस की सच्ची देशभक्ति, अदम्य साहस और उनके विचार हमेशा ही प्रेरणादायक है। आजादी के इतिहास में उनके सच्चे योगदान को युगों–युगों तक याद किया जाएगा। सुभाष चन्द्र बोस को सच्ची श्रद्धाजंलि यही होगी कि हम सभी उनके आदर्शों पर चले, शोषण के खिलाफ हमेशा आवाज उठाये और एक सफल भारत के निर्माण में भरपूर अपना सहयोग दे ।

4.0 सन्दर्भ सूची :

1. विपिन चन्द्र, "भारत का स्वतन्त्रता संघर्ष"
2. सुमित सरकार, "मार्डन इण्डिया"
3. आर॰ एल॰ शुक्ल, "आधुनिक भारत का इतिहास"
4. पटाभि सीतारमैया, "हिस्ट्री ऑफ द इण्डियन नेशनल कांग्रेस इन इण्डिया"
5. मुन्शी के॰ के॰, "अखंड भारत"
6. ताराचन्द, "भारतीय आन्दोलन का इतिहास"
7. एस॰ आर॰ शर्मा, "आधुनिक भारत का निर्माण"
8. आर॰ सी॰ मजूमदार, "आधुनिक भारत"
9. अयोध्या सिंह, "भारत का मुक्ति संग्राम"
10. बी॰ एल॰ ग्रोवर, "आधुनिक भारत का इतिहास"